IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 8, April 2023

हिन्द महासागर में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और भारतीय सुरक्षा

डॉ. राजीव कुमार सिंह
सैन्य विज्ञान विभाग
शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, रीवा, म.प्र., भारत

शोध सारांश :–

हिन्द महासागर प्रशान्त और अटलांटिक महासागर के बाद विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है, जो भारत के कन्याकुमारी से दक्षिणी ध्रुव अंटार्टिका तक फैला हुआ है। वर्तमान समय में हिन्द महासागर विश्व का एक ऐसा क्षेत्र है जो अस्थिर और अशान्त है। राजनीतिक हलचल भी महाशक्तियों की प्रतिद्वन्दिता, इसोत्र की मूल विशेषताएं हैं। जब से नौ सैनिक शक्ति के महत्व को समझा जाने लगा है, विशेषकर द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् से ही यह क्षेत्र संघर्ष, तनाव और टकराव का केन्द्र बन गया है।

मुख्य शब्द :–हिन्द, महासागर, प्रतिस्पर्धा, भारतीय, टकराव, महाशक्ति, प्रतिद्वन्दिता, सुरक्षा, विश्वयुद्ध आदि।

प्रस्तावना :–

भारतीय परिप्रेक्ष्य में हिन्द महासागर का विशेष महत्व है क्योंकि भारत दक्षिणी एशिया का सबसे बड़ा राष्ट्र है यह तीनों ओर से इस महासागर द्वारा घिरा हुआ है। हिन्द महासागर उत्तर से दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिय, दक्षिण में अन्टार्कटिक तथा पूर्व एवं पश्चिम में क्रमशः आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका आदि महाद्वीपों द्वारा घिरा हुआ है चूंकि भारत हिन्द महासागर के केन्द्र में स्थित है और इसकी तटीय रेखायें हिन्दी महासागर के द्वारा निर्धारित होती है, इसलिए हिन्द महासागर का भारत के लिए स्त्रतिजिक महत्व बढ़ जाता है।

19वीं शताब्दी के विश्व प्रसिद्ध अमेरिकी सैन्य विशेषज्ञ अल्फ्रेड महान ने कहा था–''हिन्द महासागर सात समुद्रों की कुंजी है। जो भी देश हिन्द महासागर को नियंत्रित करता है वही एशिया पर वर्चस्व स्थापित करेगा साथ ही 21 वीं शताब्दी में विश्व के भाग्य का फैसला स्थल पर न होकर समुद्र पर होगा।''

हिन्द महासागर का परिचय :–

विश्व की तेजी के साथ बदलती परिस्थितियों में हिन्द महासागर को भू–सामरिक तथा भू–राजनीतिक स्थिति के कारण इसका महत्व निरन्तर बढ़ता जा रहा है क्योंकि भारत दक्षिणी एशिया का सबसे बड़ा राष्ट्र है जिसे तीन ओर से हिन्द महासागर प्रभावित करता है यह पृथ्वी के कुल धरातल क्षेत्र के 14.65 प्रतिशत भाग में है इसकी सर्वाधिक गहराई 7725 मीटर प्लैनेट ट्रीप ने है, इस महासागर से होकर यूरोप, अमेरिका एवं मध्य पूर्व दक्षिण एशिया और प्रशांत क्षेत्रों को जोड़ने वाले अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यापारिक एवं सामरिक जलमार्ग है।

हिन्द महासागर भारत की सुरक्षा के दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि एक ऐसा चौराहा भी है, जिससे विश्व राजनीति गुजरती दिखाई देती है। प्रारम्भ से ही बड़ी शक्तियों ने सामरिक गतिविधियों के माध्यम से इस क्षेत्र में शक्ति सन्तुलन को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया है।

हिन्द महासागर में बड़ी शक्तियों की रुचि का कारण उनके अपने आर्थिक, राजनैतिक, भौगोलिक एवं सामरिक हित है, जिसके कारण ही उसे अपने अधिकार क्षेत्र में बनाए रखने की प्रतिस्पर्धा के कारण इस क्षेत्र की शान्ति के लिए एक गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो गई है।

भौगोलिक स्थिति :–

हिन्द महासागर विश्व के महासागरों में एक महत्वपूर्ण महासागर है, जिसके कारण ही विश्व राजनीति का केन्द्र–बिन्दु इस क्षेत्र को माना जाता है, इसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल 7 करोड़ 44 लाख, 27 हजार वर्ग किलोमीटर है, जो एशिया एवं अफ्रीका के सम्पूर्ण क्षेत्रफल के बराबर है। यह एशिया अफ्रीका तथा अस्ट्रेलिया के महाद्वीपों से घिरा हुआ है तथा दक्षिण में इसका सीमा क्षेत्र अर्न्टाटिक महासागर द्वारा तय किया जाता है, दक्षिणी सीमा का निर्धारण करना कठिन समस्या है, परन्तु अनुमानतः हिन्द महासागर की दक्षिणी सीमा लगभग 60^0 दक्षिणी अक्षांश के नीचे तक है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-9638

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 8, April 2023

कुल क्षेत्रफल : 7,44,27,000 वर्ग कि.मी.
विश्व के कुल जलीय
क्षेत्र का प्रतिशत : 20.3 प्रतिशत
औसत गहराई: 3872 मीटर
सबसे गहरा भाग : 7725 मीटर (जावा ट्रेन्च)
प्रमुख सागर : अरब सागर, बंगाल की खाड़ी
अण्डमान सागर, लाल सागर
सबसे बड़ा सागर : अरब सागर 38,63,000
वर्ग कि.मी.
सबसे छोआ सागर : लाल सागर 4,40,000 वर्ग कि.

हिन्द महासागर : परिचय भारत की भौगोलिक स्थिति

उत्तर से दक्षिण तक हिन्द महासागर की लम्बाई 10400 किलोमीटर तथा पूर्व से पश्चिम तक इसकी चौड़ाई 9,600 किलोमीटर है, सम्पूर्ण भू–मण्डल का 14.2 प्रतिशत तथा पृथ्वी के सम्पूर्ण जलमंडल का 20.3 प्रतिशत इसकी परिधि में आता है। 47 राज्य इसके तटों को छूते हैं, पूर्व से पश्चिम की दिशा में यह आस्ट्रेलिया से अफ्रीका तक और उत्तर से दक्षिण में यह केप कोमोरिन से अटलांटिक महाद्वीप तक फैला हुआ है, इसका जल आस्ट्रेलिया, एशिया और अफ्रीका के तीन महाद्वीपों को छूता है। विश्व के अधिकांश राष्ट्र इसके तट पर स्थित हैं या भीतरी प्रदेश में हैं, इसके 36 तटवर्ती और भीतरी राष्ट्र स्थित हैं इसके छोटे या बड़े द्वीप महाद्वीपों के ही अंश हैं, जिसमें संसार की लगभग एक चौथाई जनसंख्या निवास करती है।

हिन्द महासागर को भौगोलिक दृष्टि से दो भागों मे ं विभाजित किया जा सकता है, पूर्वी क्षेत्र तथा पश्चिमी क्षेत्र। इनका सीमा विभाजन मध्य हिन्द महासागरीय जल–मग्न श्रेणी के आधार पर किया जा सकता है। यह जल मग्न श्रेणी में लक्ष्यद्वीप, मालद्वीप से प्रारम्भ होकर सुदूर दक्षिण में 77^0 और 80^0 पूर्वी देशान्तरों के मध्य से गुजरती हुई समाप्त होती है। पश्चिमी क्षेत्र में, ओमान, बेसिन तथा सिन्धु जल–मग्न शंकु क्षेत्र प्राकृतिक भण्डारों के प्रमुख क्षेत्र है पूर्वी क्षेत्र में गंगा जल–मग्न शंकु क्षेत्र इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अफ्रीका के निकटवर्ती समुद्री क्षेत्रों में मेडागास्कर जल–मग्न क्षेत्र प्रमुख है और पूर्व में अण्डमान निकोबार जल–मग्न क्षेत्र विशेष है। जल–मग्न श्रेणियों की स्थिति और फैलाव के कारण हिन्द महासागर में अनेक द्वीप हैं, जो कि सामरिक तथा राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

हिन्द महासागर के मुख्य द्वीप :– हिन्द महासागर में स्थित भू–कूटयोजनात्मक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है, ये द्वीप इतिहास में 17वीं शताब्दी में जाने गये–

- पूर्वी क्षेत्रों में – (1) अंडमान, निकोबार (बंगाल की खाड़ी)
  (2) कोकोस तथा किसमस द्वीप (जावा के पास)
- पश्चिमी क्षेत्रों में – (1) मेडागास्कर – (अफ्रीका के दक्षिण–पूर्व की ओर)
  (2) लक्ष्यद्वीप, मेडागास्कर, मॉरिशस, ब्रितानी, जंजीवार, सैचिलस, अमीरेंट, अलदावा कार्कुहार।
- दक्षिणी क्षेत्र में – श्रीलंका, मालदीव, सेंटपालद्वीप स्थिति है।
- केन्द्रीय क्षेत्र में – चागोस द्वीप तथा डियागोगार्सिया द्वीप स्थित है।

हिन्द महासागर के तटवर्ती सागरों में वस्तुतः लाल सागर और फारस की खाड़ी आते हैं, इसमें लाल सागर, अफ्रीका और अरब के मध्य द्रोणी घाटी का द्योतक है, इसका तट चट्टानी और ढालू है। क्षेत्रफल की दृष्टि से प्रशान्त तथा अटलांटिक महासागर स्त्रातोजिक महत्व विश्व के अन्य सागरों की अपेक्षा काफी अधिक है। इसके कुछ प्रमुख कारण है, यह कि पश्चिम के सभी व्यापार इसी क्षेत्र से सामुद्रिक जलयानों द्वारा होते हैं। एक तरफ जहाँ हिन्द महासागर के तटवर्ती देश आर्थिक एवं

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 8, April 2023

तकनीकी दृष्टि से पिछड़े हुए हैं, वहीं दूसरी ओर हिन्द महासागर का महत्व उसके जलमार्गों और उसके क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक सम्पदा के कारण अत्यधिक बढ़ जाता है, इसके गर्भ में उपलब्ध खनिज संसाधनों के भण्डार महाशक्तियों में प्रतिद्वन्दिता का कारण है। विश्व का 37 प्रतिशत तेल, 90 प्रतिशत रबर, 79 प्रतिशत सोना, 70 प्रतिशत टिन, 27 प्रतिशत क्रोमियम, 28 प्रतिशत मैगनीज, 16 प्रतिशत लोहा, 12.5 प्रतिशत सिक्का, 11.5 टंगस्टन, 11 प्रतिशत निकिल, 10 प्रतिशत जिंक, 98 प्रतिशत हीरे और 60 प्रतिशत यूरेनियम इसके क्षेत्र में पाये जाने की संभावनायें हैं।

हिन्द महासागर का भारत के लिए स्त्रातेजिक महत्व रखना स्वाभाविक है, क्योंकि प्राचीन काल से भारत का 85 प्रतिशत सामुद्रिक व्यापार इसी मार्ग द्वारा सम्पन्न होता रहा है। इसीलिए भारत के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सामरिक जीवन से संबंध रहना स्वाभाविक है, एक परिवहन मार्ग के नाते हिन्द महासागर का महत्व अत्यधिक इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि यूरोप, पूर्वी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा ओशियाना को जोड़ने वाले जल एवं वायु मार्ग यहाँ से गुजरते हैं। हिन्द महासागर अटलांटिक और प्रशांत महासागरों को जोड़ता है, जल मार्गों का जाल यहाँ सबसे घना है, कुछ समय पहले इस मार्ग से माल से लदे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जहाजों का ही जाना–जाना होता था परन्तु आज अमेरिका व रूस की पण्डुब्बियाँ यहाँ से आती–जाती हैं एवं तेल से भरे सैकड़ों जहाज प्रत्येक माह जापान, यूरोप एवं उत्तरीय व दक्षिणी अमेरिका जाने के लिए हिन्द महासागर से होकर ही गुजरते हैं।

हिन्द महासागर का सामरिक महत्व :–

हिन्द महासागर आर्थिक एवं व्यापारिक केन्द्र होने के कारण प्राचीन काल से ही सामरिक महत्व का क्षेत्र रहा है, ब्रिटिश शासन के विशाल साम्राज्य का प्रमुख कारण ही हिन्द महासागर पर लगभग तीन शताब्दी तक उसका प्रभुत्व बनाए रखना था। ब्रिटिश साम्राज्य के पतन के साथ ही इस क्षेत्र में शान्ति शून्यता आ गई जिसका लाभ उठाकर विकसित राष्ट्रों ने अपने महत्वपूर्ण अड्डे इस क्षेत्र में स्थापित कर लिए और इसी कारण हिन्द महासागर में महाशक्तियों के मध्य अधिकार जमाने की प्रतिस्पर्धा प्रारम्भ हो गई, इसी कारण उन्होंने अपने–अपने अड्डों को नाभकीय हथियारों से भी सुसज्जित कर दिया है। जिससे इस क्षेत्र में विशेष रूप से दक्षिण एशिया के देशों एवं भारत की चिन्ता बढ़नी स्वाभाविक है। वहीं हिन्द महासागर में महाशक्तियों द्वारा नौ सैनिक बेड़ों के जमाव का विशेष राजनैतिक, आर्थिक एवं सामरिक महत्व के निम्नानुसार कारण हैं –

- विशाल प्राकृतिक संसाधन की उपलब्धि के कारण अपने उद्योगों का विकास करके अपनी आर्थिक एवं सामरिक स्थिति को आसानी से मजबूत बनाया जा सकता है।
- हिन्द महासागर में आर्थिक एवं सामरिक दृष्टि से उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के विशाल भण्डार को अपनी परिधि में बनाए रखने के लिए ताकि भविष्य में इसका दोहन किया जा सके।
- चूंकि यह क्षेत्र पूर्व में यूरोपीय राष्ट्रों का उपनिश रहा है तथा आर्थिक और औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। इसलिए बड़ी शक्तियाँ इस क्षेत्र के राष्ट्रों को अपने औद्योगिक अधिक्य की पूर्त आपूर्ति के केन्द्र के तौर पर प्रयोग कर रही है।
- जलपोतों के आयात–निर्यात का सर्वोत्तम मार्ग है, जहाँ से पूर्वी एवं पश्चिमी क्षेत्रों का व्यापार सम्भव है।
- ऊर्जा का प्रमुख स्रोत तेल भी सर्वाधिक आकर्षण का एक प्रमुख कारण है। हिन्द महासागर में विश्व के तेल रिजर्व का 50 प्रतिशत है तथा विश्व में समुद्रों की सतह से निकलने वाले तेल का 40 प्रतिशत हिन्द महासागर की तलहटी से निकलता है।
- हिद महासागर मत्स्य उत्पादन की दृष्टि से भी अत्यन्त आकष्रणीय है।
- दक्षिण एशिया के राष्ट्रों पर अपना दबाव बनाए रखने के लिए सर्वोत्तम क्षेत्र है ताकि आवश्यकतानुसार इनका शोषण किया जाता रहे इन पर अपनी आर्थिक एवं सामरिक पकड़ मजबूत बनी रहे।
- विकसित राष्ट्रों में विशेष रूप से अमेरिका का उद्देश्य अपने विरोधियों की शक्ति को कमजोर करके उसको अपने नियंत्रण में रखने के लिए चाभी अपने हाथ में रखना चाहता है।
- इस महाद्वीप के अधिकांश देश विकसशील तथा अल्प विकसित है जिनकों आपस में लड़ाकर अपने हथियार व्यापार को बढ़ावा देने के लिए अमेरिका इस क्षेत्र को सर्वोत्तम मानता है।
- एक ध्रुवीय व्यवस्था हो जाने के कारण अमेरिका अब खुलकर हिन्द महासागर के देशों एवं अड्डों में हस्तक्षेप कर रहा है, क्योंकि इस पर उंगली उठाना बहुत ही कठिन काम है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 8, April 2023

हिन्द महासागर में महाशक्तियों के अड्डे :–

हिन्द महासागर से अपने आर्थिक सामरिक एवं राजनीतिक हितों की सुरक्षा के लिए बड़े राष्ट्रों ने अपने–अपने नौ–सैनिक अड्डे ही स्थापित नहीं किये हैं बल्कि अत्याधुनिक शस्त्र–प्रणाली से भी सुसज्जित कर रखे हैं।

- **अमेरिका–** विश्व में सर्वाधिक शक्तिशाली होने के साथ ही हिन्द महासागर के क्षेत्र में भी इसकी स्थिति सर्वोत्तम है। इसके द्वारा स्थापित नौ सैनिक अड्डे आधुनिकतम हथियारों एवं संचार प्रणाली से सुसज्जित है। जैसे–असमारा, बहरीन, डियागोगार्सिया एवं सिंगापुर इत्यादि।
- **ब्रिटेन–**हिन्द महासागर को ब्रिटेन ने अपनी शक्ति बना रखा है परिस्थितियों के परिवर्तन के पश्चात् भी आज उनके पास इस क्षेत्र के कुछ महत्वपूर्ण द्वीप विद्यमान है जिन्हें आधुनिक प्रणाली से अपने अधीन कर रखा हैं
- **फ्रांस–**फ्रांस की स्थिति लाल सागर के साथ लगे भूमध्य सागर के तट पर है। अतः यह इस रास्ते से हिन्द महासागर पर अपनी स्थिति को मजबूत रखने की प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ गया है फ्रांस लाल सागर के तट पर स्थित जिबोरी, जेर अफर्स तथा इसास द्वीप है। जिन्हें ये संचार व्यवस्था तथा वायु अड्डे के रूप में विकसित किया हुआ है।
- **चीन–**हिन्द महासागर में चीन की रुचि किसी शक्तिशाली देश के मुकाबले कम नहीं है किन्तु यह सच है कि उसकी नौ–सेना की स्थिति प्रतिरक्षात्मक है। क्योंकि उसका विस्तार अन्य की तुलना में कम है। चीन ने अपने आधुनिक प्रक्षेपास्त्र और जलयान अड्डे की सुविधाएं जंजीवार (तन्जानिया द्वीप) में बना रखी हे तथा ही पाक के साथ समझौते के आधार पर कराची बन्दरगा का भी प्रयोग कर लेता है।
- **सोवियत संघ–**सोवियत संघ ने हिन्द महासागर में अपनी गहरी रुचि दिखाई है, किन्तु सोवियत संघ के खण्डन के कारण उसकी सामरिक परिस्थितियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। उसने दक्षिणी यमन के सकोवा द्वीप में वायुयानों तथा जलयानों के लिए आधुनिक अड्डों का निर्माण किया है। इसके साथ ही अदन, मामाडिश, होडेडा तथा बारवेरा (सोमालिया) द्वीपों में अपनी आधुनिक संचार प्रणाली लगा रखी है।

अतः हिन्द महासागर में बड़ी शक्तियों के अड्डों के कारण दक्षिण एशिया में विशेष रूप से भारत के लिए सामरिक एवं कूटनीतिक समस्या खड़ी हो गई हैं। इस प्रकार हिन्द महासागर में बड़ी शक्तियों के अपने हित है जिनके कारण वह इस क्षेत्र से कभी हटने के लिए गम्भीरता से सोचती तक नहीं है।

हिन्द महासागर में नौ सैनिक गतिविधियाँ :–

दक्षिण एशिया में बढ़ते तनाव के कारण भारतीय उपमहाद्वीप एक प्रकार से युद्ध स्थल के रूप में बदलता जा रहा है और युद्धाभ्यास के नाम पर अमूमन सारी महाशक्तियों के जंगी जहाज किसी न किसी बहाने पूरे हिन्द महासागर में हमेशा चक्कर लगा रहे हैं। निःसंदेह हिन्द महासागर में बढ़ते सैन्यीकरण से भारत का चिन्तित होना स्वाभाविक हैं इस क्षेत्र के सैन्यीकरण का प्रत्यक्ष प्रभाव भारतीय रक्षा एवं सुरक्षा के हितों पर पड़ता है। हिन्द महासागर के शान्ति क्षेत्र बनने से ही हमारे आर्थिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय हित सम्भव है।

भारत के लिए सामुद्रिक शक्ति का महत्व :–

भारत के लिए सामुद्रिक शक्ति का जितना महत्व है शायद ही किसी देश के लिए इतना महत्व समुद्र का हो, भारतीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए यह आवश्यक है कि भारत अपनी सामुद्रिक शक्ति का विकास कर हिन्द महासागर पर अपना नियंत्रण स्थापित करें। क्योंकि महाशक्तियों (सोवियत रूस एवं संयुक्त राज्य अमेरिका) द्वारा योजना बद्ध तरीके से हिन्द महासागर पर होड़ जोकि ''शान्ति क्षेत्र'' की कल्पना बनती जा रही है। अतः भारत को विशेषकर समुद्रिक क्षेत्र से सतर्क रहने की विशेष आवश्यकता है। समुद्र किसी समय सुरक्षा के रूप में जाना जाता था वहीं आज सरक्षा के लिए सर्वाधिक महत्व का विषय बन गया हैं आधुनिक युद्ध का स्वरूप अत्यन्त व्यापक है जिससे सभी सेनाओं के सहयोग के द्वारा ही सफलता प्राप्त की जा सकती है, अन्यथा नहीं।

भारत की सामुद्रिक नीति :–

भारत की सामुद्रिक नीति का होना अतिआवश्यक है क्योंकि तीन ओर से समुद्री सीमाएं इसको स्पर्श कर रही है। हिन्द महासागर में बड़ी शक्तियों की बढ़ती होड़ और उनके निजी स्वार्थों ने भारत को अपनी सामुद्रिक नीति बनाने के लिए मजबूर कर दिया है–

- भारत के लिए आवश्यक है कि अपनी सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था के लिए सामुद्रिक शक्ति का आधुनिकतम विकास करें।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 8, April 2023

- भारत यदि हिन्द महासागर पर नियंत्रण चाहता है तो इसे अपनी सुदृढ़ नौ–सैनिक शक्ति को तुलनात्मक श्रेष्ठ बनाना होगा ।
- सीमान्त क्षेत्रों के हितों का भी भारत को विशेष ध्यान रखना होगा तथा सीमांत क्षेत्रों में दखल अन्दाजी को रोकने के लिए भी नौ–सेना सीमा बल के रूप में तटरक्षा बल को तैनात करना होगा।
- भारत अपनी तीनों समुद्री सीमाओं (पूर्वी,पश्चिमी तथा दक्षिणी) में शक्तिशाली एवं अति आधुनिक जलयानों एवं पनडुब्बियों का निर्माण एवं उनकी तैनाती करें।
- नौ–सेना की अपनी एक स्पष्ट नीति हो।
- आत्मनिर्भर नौ–सेना का होना आवश्यक है।
- सामरिक एवं कूटनीतिक गतिविधियों पर विशेष रूप से ध्यान रखना होगा ताकि शत्रु के इरादे सफल न हो सके।
- अपने आर्थिक हितों को बचाए रखने के लिए योजना एवं कार्यवाही सुव्यवस्थित तरीके से करनी चाहिए।
- तीनों सेनाओं के सहयोग के आधार पर ही एक सुनिश्चित योजना बनानी चाहिए ताकि उद्देश्य को सरलता से प्राप्त किया जा सके ।
- अपनी नौ–सेना को आधुनिकतम बनाये रखने के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के साथ जोड़ना चाहिए।

अतः इन विभिन्न तत्वों को ध्यान में रखकर ही अपनी सामुद्रिक नीति भारत को तय करनी होगी ताकि हिन्दमहासागर पर निगरानी रखी जा सके।

हिन्द महासागर : महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा का केन्द्र :

द्वितीय विश्व से पूर्व हिन्दमहासागर के अधिकांश तटवर्ती क्षेत्रों पर ब्रिटेन का नियंत्रण था तथा हिन्द महासागर को ब्रिटेन की झील के नाम से पुकारा जाता था। उस समय किसी भी देश की हिन्दमहासागर में कोई भी रुचि नहीं रही है।

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के साथ हिन्द महासागर के तटवर्ती क्षेत्रों से ब्रिटेन का प्रभुत्व समाप्त होने लगा, 1966 में ब्रिटेन ने स्वेज से पूर्व में स्थित अपने नौ सैनिक अड्डों को धीरे–धीरे समाप्त करने की घोषणा कर दी। इससे यह क्षेत्र महाशक्तियों की राजनीति कर एक अखाड़ा बन गया। द्वितीय विश्व युद्ध में युद्धकला के क्षेत्र में जो क्रांतिकारी परिवर्तन हुए उससे नौ सैन्य विशारद भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके इस संबंध में तीन दृष्टिकोण प्रचलित हैं –

- हिन्दमहासागर में अमेरिका हित उसकी साम्राज्यवादी महत्वकांक्षाओं से प्रेरित है तथा वह जानबूझकर सोवियत प्रसारवाद का डर पैदा कर रहा है।
- विद्वानों का मानना है कि महाशक्तियों की हिन्दमहासागर में रुचि शीतयुद्ध का एक विस्तार है, जिसने इस क्षेत्र में अति शक्ति प्रतिद्वन्दिता को जन्म दिया है।
- कतिपय चीनी और अमेरिकी कूटनीतिज्ञ किसिंगर आदि यह मानते हैं कि सोवियत संघ इस क्षेत्र में अपना अधिपत्य स्थापित करने को लालायित है।

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् जब एशिया के राष्ट्र साम्राज्यवादियों के जाल से निकलने में सफल होने लगे तो महाशक्तियों के लिए यह असहनीय हो गया अतः उन्होंने इन क्षेत्रों में आर्थिक या कूटनीतिक शिवरों को स्थापित करके इनके प्रभाव के लिए प्रतिस्पर्धा प्रारम्भ कर दी। इससे महाशक्ति स्पर्धा का केन्द्र एशिया बन गया। अतः महाशक्तियों ने अपने हितों की पूर्ती के लिए तटवर्ती देशों के विकास मार्ग को रोकने का हर सम्भव प्रयास किया हिन्द महासागर पर प्रभाव जमाने के पीछे महाशक्ति्यों के निम्न उद्देश्य रहे है–

- तटो पर स्थित राष्ट्रों को अपने अधिकार एवं प्रभाव क्षेत्र में लाने का प्रयास करना।
- मित्र देशों में आवश्यकता पड़ने पर शीघ्र ही आर्थिक सहायता व सैनिक सामग्री प्रदान करना । जिससे ये कभी एकजुट होकर इन शक्तियों से सामना करने तथा चुनौती देने का साहस न कर सके।
- अपने तेल की आपूर्ति को सुरक्षित रखना आज के युग में तेल आधुनिक युग के लिए रक्त बन गया है। महाशक्तियों को पता है कि तेल के अभाव में उनकी स्थिति किसी बड़े युद्ध में टिकने योग्य नहीं रहेगी।
- इसका अन्तिम उद्देश्य आपस में एक–दूसरे के नियंत्रण व प्रभाव को शिथिल करना, इत्यादि शामिल है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 8, April 2023

हिन्द महासागर में अमेरिकी उपस्थिति :–

हिन्द महासागर में अमरीका की उपस्थिति सन् 1949 के बाद से ही देखी जा सकती है जब उसने साम्यवाद के प्रतिरोध की नीति अपना ली थी अमेरिका ने हिन्द महासागर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति का विस्तार उस समय करना प्रारम्भ किया जब ब्रिटेन से यह संकेत किया था कि यह हिन्द महासागर क्षेत्र से हटने की वह मजबूरी में है। हिन्द महासागर में अमेरिका की उपस्थिति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसमें उसके न केवल स्थायी सैनिक अड्डे है बल्कि उसे अनेक देशों की हवाई पट्टियों उसके परमाणु अस्त्रों से लैस युद्धपोत इसमें निरन्तर गश्त लगाते हैं।

हिन्द महासागर में सोवियत संघ की उपस्थिति :–

सोवियत संघ के भी अपनी सुरक्षा के नाम पर हिन्द महासागर क्षेत्र में सक्रिय रहा है। 1967 में ब्रिटेन द्वारा स्वेज पूर्व के नौ–सैनिक अड्डों को छोड़ने की घोषणा के बाद हिन्द महासागर में प्रथम बार सोवियत नौ सैनिक गतिविधियों की शुरुआत हुई । परन्तु सोवियत संघ के यहाँ कभी कोई अड्डे नहीं रहे और न ही वह कोई अड्डा बनाने का इरादा रखता था ।

हिन्द महासागर में फ्रांस और चीन :–

री यूनियन द्वीप पर फ्रांस का अधिकार है, इसलिए फ्रांस भी कभी–कभी इस क्षेत्र में घुसपैठ करता रहता है। हाल ही में चीन भी हिन्द महासागर में रुचि लेने लगा है। सोवियत रिक्तता की पूर्ति एवं वैश्विक स्तर पर अपनी शक्ति की अभिवृद्धि हेतु व्यावसायिक व नौ सैन्य में चीन की बढ़ रही गतिविधियां हिन्द महासागरीय क्षेत्र की सुरक्षा में अत्यधिक चिन्ता का विषय है।

चीन जहाँ एक ओर होरभुज स्ट्रेट के निकट पाकिस्तान के 'ग्वादर' में बन्दरगाह सुविधाएं विकसित कर रहा है, वहीं पूर्व में "कोको द्वीप' पर सामरिक सुविधाएं विकसित करके भारत की सामुद्रिक घेरेबन्दी करने हेतु गम्भीर कदम उठा रहा है

हिन्द महासागर की समस्या और भारतीय दृष्टिकोण :

हिन्द महासागर में बढ़ते सैन्यीकरण पर भारत का चिन्तित होना स्वाभाविक है क्योंकि इसका प्रभाव भारत की सुरक्षा हितों पर सीधा पड़ता है। भारत प्रारम्भ से ही हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र घोषित करने की वकालत करता रहा है। तत्पश्चात् भारतीय दृष्टिकोण का स्वागत करते हुए तथा अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए श्रीलंका, तंजानिया, ईराक, वर्मा, दक्षिणी यमन, और मॉरिशस आदि ने इस क्षेत्र में बाहरी शक्तियों की उपस्थिति का विरोध करते हुए शान्ति क्षेत्र निर्माण का पूर्ण समर्थन किया। कुछ ऐसे भी देश हैं जैसे–भूटान, नेपाल, सुडान, जाम्बिया, कुवैत, युगांडा इत्यादि देश ऐसे हैं जिन्होंने अपना मत पूर्णतः स्पष्ट तो नहीं किया किन्तु वे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र निर्मित किये जाने का समर्थन करते हैं। वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, मेडागास्कर, थाईलैण्ड तथा दक्षिणी अफ्रीका इत्यादि देश शामिल क्षेत्र के सिद्धान्त का समर्थन तो करते हैं परन्तु साथ ही शान्ति क्षेत्र के संबंध में आपत्तियाँ भी उठाते हैं। सच्चाई यह है कि ये देश विभिन्न क्षेत्रीय निर्गुट देशों के विपरीत पश्चिमी खेमों से जुड़े हुए हैं। इसी कारण वे पश्चिमी खेमों द्वारा लगायी गयी पाबंदियों का विरोध नहीं कर पाते हैं।

अतः यह उल्लेखीनय है कि अमेरिका और सोवियत संघ की सीमाएं हिन्द महासागर को स्पर्श नहीं करती किन्तु स्वार्थ कभी सीमायें नहीं देखता ऐसी स्थति में जहाँ स्वार्थों एवं अपने हितों को ही प्राथमिकता दी जा रही हो तो क्या शांति क्षेत्र की कल्पना को साकार किया जा सकता है? एशिया महाद्वीप में सामान्य स्थिति में उत्पन्न जटिलता को देखते हुए भारत अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा तभी सुनिश्चित कर सकता है जबकि न केवल उसकी सीमाओं से लगे, भागों में बल्कि सारे एशिया में तनाव में शिथिलता आय, शान्ति और स्थिरता का वातावरण बने।

हिन्द महासागर में शान्ति स्थापना हेतु सुझाव :–

- हिन्द महासागर की गोद में बसे देशों को अपने यहाँ किसी भी हालत में महाशक्तियों को सौनिक अड्डे बनाने की इजाजत नहीं देनी चाहिए।
- हिन्द महासागर के तटवर्ती एवं पृष्ठ देशों को हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र घोषित करने के प्रस्तावों पर शीघ्र एकमत होना चाहिए।
- हिन्द महासागर के तल एवं सतह पर किसी भी प्रकार के आणविक हथियारों के ब्यूहन की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 8, April 2023

- सभी तटवर्ती देशों को अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने एवं राजनीतिक स्थायित्व कायम रखने के लिए हर सम्भव प्रयास करने चाहिए।
- हिन्द महासागर के तटवर्ती देशों को अपने प्रयास से एक ऐसी सशक्त सामूहिक सामुद्रिक सेना का गठन करना चाहिए जो आपात काल में इस क्षेत्र की सुरक्षा को उत्पन्न खतरे से निपटने के लिए कम से कम समय में उपस्थित हो सके।
- भारत हिन्द महासागर की गोद में बसे राष्ट्रों में सबसे अधिक विकसित है अतः इस क्षेत्र में शान्ति स्थापना के लिए तटवर्ती देशों को एकता के सूत्र में पिरोने के दायित्वों का कार्य भारत को बड़ी ही सावधानीपूर्वक करना चाहिए साथ ही देश के भीतर युद्धपोतों एवं जहाजी बेड़ों का निर्माण तथा आधुनिकीकरण में विशेष बल देना हमारी मौलिक आवश्यकता है।
- सभी तटवर्ती देशों द्वारा गश्ती जहाजों के माध्यम से उन द्वीपों की लगातार गश्त की व्यवस्था की जानी चाहिए जो उसके कब्जे में है।

निष्कर्ष :

हिन्द महासागर के क्षेत्र में हुई प्रत्येक गतिविधि का भारतीय सुरक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है। भारत प्रारम्भ से ही हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र घोषित करने की वकालत करता रहा है। इस क्षेत्र का सामरिक, आर्थिक, कूटनीतिक तथा पर्यावरणीय क्षेत्र में सदियों से विशेष महत्व रहा है। हिन्द महासागर की वर्तमान स्थिति को देखते हुए भारत के लिए यह आवश्यक है कि अपनी नौ–सैनिक शान्ति को अत्यधिक सुदृढ़ एवं विकसित करें। भारत हिन्द महासागर क्षेत्र की लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है तथा इस क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभाने के लिए प्रयासरत है।

विश्व के अधिकांश सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक विश्लेषक इसे सर्वाधिक संभावनाओं वाला क्षेत्र तथा विश्व का भावी ''पावर हाउस'' मानते हैं। पिछले कुछ दशकों से इस क्षेत्र में विश्व की महाशक्तियों की दिलचस्पी तथा हस्तक्षेप दोनों ही बढ़ा है। इसका कारण यहाँ छिपे पड़े प्राकृतिक व खनिज संसाधनों एवं पेट्रोलियम उत्पादों का अकूत भण्डार विविध भौगोलिक परिस्थितियों के कारण सामुद्र परिस्थितिकी तंत्र एवं कृषि जैव विविधता, कृषि व खाद्य उत्पादन की अत्यधिक सम्भावनाएं समुद्र जलीय संसाधन, समुद्रपारीय व्यापारिक पारगमन तथा समुद्र मानवीय संसाधन का होना शामिल है। परन्तु क्षेत्र में विश्व महाशक्तियों की दिलचस्पी अपने मौजूदा एवं भावी सामरिक, राजनैतिक व कूटनीतिक हितों के लिए ज्यादा है, इसलिए वे इस क्षेत्र में अधिकांशतः बहलाने–फुसलाने की नीतियां अपनाते रहे। ऐसी स्थिति में भारत को एक सबल नौ–शक्ति बनाने के लिए अभी बहुत कुछ करना है, जिसका मूल्यांकन हिन्द महासागर में चल रही शान्ति स्पर्धा को ध्यान में रखकर करना अधिक न्याय संगत होगा।

संदर्भ सूची :–

[1]. 'आधुनिक स्त्रतेजिक विचारधारा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा'', डॉ. अशोक कुमार सिंह, पृ.क्र. 508–523
[2]. "राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा'' डॉ. लल्लन जी सिंह, पृ. क्र. 565–582
[3]. "मार्डन राष्ट्रीय रक्षा व सुरक्षा'' डॉ. सुरेन्द्र कुमार मिश्र, पृ. क्र. 178–191
[4]. "अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध'' डॉ. बी. एल. फडिया, पृ. क्र. 505–511
[5]. ''प्रतियोगिता दर्पण'' दिसम्बर 2017, पृ. क्र. 91–92
[6]. 'स्त्रातेजिक (युद्धनीतिक) अध्ययन' डॉ. लल्लन जी सिंह, पृ. क्र. 342–364
[7]. "हिन्द, प्रशान्त क्षेत्र में भारतीय सामुद्रिक रणनीति प्रो. हरिशरण एवं प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा, पृ. क्र. 74–110
[8]. "स्त्रातेजिक विचारधारा उद्भव एवं विकास" डॉ. रामसूरत पाण्डेय, पृ. क्र. 204–214
[9]. 'राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंध'' डॉ. बाबूलाल पाण्डेय एवं डॉ. रामसूरत पाण्डेय पृ. क्र. 188–207
[10]. "राष्ट्रीय सुरक्षा" डॉ. ओम प्रकाश तिवारी, पृ. क्र. 278द्289
[11]. ''राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा'' डॉ लल्लन जी सिंह, पृ. क्र. 632–654
[12]. ''राष्ट्रीय सुरक्षा'' डॉ. अशोक कुमार सिंह, पृ. क्र. 336–337